ॐ श्रीशः पातु

कलौतु केवला भक्ति

मोक्ष कारण सामग्र्याम भक्ति रेवगरीयसि ।
तेषां ज्ञानि नित्य युक्त एक भक्तिर्वि शिष्यते ॥१॥
अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम ।
उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटम्बकम ॥ २ ॥

निष्काम कर्म्म द्वारा लोक हित में रत होते हुए
भगवान् की भक्ति करते २ सहज में शांति
लाभ करने का सर्व श्रेष्ठ स्थान

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम

रामपुरा

भगवान् कहते हैं स्वयं भी भेद भावों को तजे ।
है रूप मेरा ही मुझे जो सर्व भूतों में भजे ॥

※प्रकाशक※
पं० मंगलराम शर्म्मा ।
सं० १९१७

मुद्रक—
बाबू कालीचरण वर्मा
धर्मराज प्रिंटिंग प्रेस लालकूआं—देहली.

आश्रम के उद्देश।

(१) श्री भगवान की भक्ति के मार्ग से मनुष्य मात्र को अति सुलभ और सर्व हितकर उपायों द्वारा, सरल और शान्ति मय जीवन बिताने की शिक्षा देकर तथा कार्य रूप में उसे दिखाकर कल्याण का लाभ कराना।

(२) धर्म और मोक्ष मुख्य समझना, अर्थ और काम को गौण समझकर भी लोक सङ्ग्रहार्थ उनका उपार्जन कर शरीर यात्रा मात्र के लिये उनसे काम लेकर शेष को लोक सेवार्थ भगवत अर्पण करना।

(३) समता भाव रखना, और सर्वत्र शान्ति का प्रचार करना यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लग भग एक कोस के अन्तर पर रामपुर के ठीक पश्चिम और जङ्गल में अति पवित्र भूमि में बना है। जल की सुविधा के लिए है, जिसमें एक कूप भी बना है, दूसरा तालाब " रामसर ,, तीर्थ रूप है- जो अभी खोदा जा रहा है, इसमें पक्के घाट बनाये जाने का आयोजन हो

रहा है। तालाब के आस पास कई बीघों में प्रेमी भक्तों के लगाये अनेकानेक उपयोगी वृक्षों, लताओं और पौधों ने इसे परम मनोहर और सुखद बना दिया है। लगभग आठसो ८०० बीघे भूमि आश्रम से लगी हुई गौओं के चरने के लिए श्री लेफटिनेण्ट राव बहादुर राव बलवीर सिंह जी ने आश्रम के लिए प्रदान की है, जिसमें गो मृगादि स्वच्छन्द करते हैं। इस वन में शिकार नहीं खेला जाता न कोई इन जीवों को डरा ही सकता है। आश्रम के अलग २ भागों में विहित स्थान बने हैं। यथाः—

(१) ब्रह्म चार्याश्रम २. साधारण पाठशाला ३. कन्या पाठशाला ४. * अछूत पाठशाला ५. अतिथियों और सत्संगियों के ठहरने का स्थान।

इस समय तक आश्रम में नीचे लिखे अनुसार कार्य आरम्भ किया गया है।

---

*नोट– अछूत पाठशाला के लिए अभी तक छप्पर का मकान था उसके स्थान में विहित अध्ययन शाला बनाये जाने की अवस्था होरही है।

१. श्री भगवान् की भक्ति का प्रचार करना।
२. गो रक्षण और इसके लिए गोचर भूमि छुड़वाना।
३. जंगलों में वृक्ष लगवाना और उनके बीच में जलाशय बनवाना।
४. शिक्षा का प्रचार करना (जिससे मनुष्य मात्र विद्या लाभ कर सकें) और प्राचीन प्रथा का फिर प्रचलित करना।
५. बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।
६. आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगडे और वैमनष्य मिटाकर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।
७. सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जाग्रत करना।
८. राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।

सर्व साधारण के जानने लिए ऊपर लिखे कार्य विभागों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

ब्रह्मचार्याश्रमः— इसमें वे छात्र हैं, जिन्होंने संसार की विषम वासना से मुंह मोड़कर आजन्म भक्ति करने

का प्रण कर लिया है। इनमें ऐसे लोग हैं जो या तो अपनी स्वतंत्रता से या अपने माता पिता की आज्ञा से आये हैं। ये कुछ तो कालिज और स्कूल से आये हुये विद्यार्थी हैं और कुछ हिंदी नागरी पढ़े हुए साधारण छात्र। इनको आध्यात्मिक शिक्षा के साथ साथ परोपकार और सेवा के द्वारा निष्काम कर्म्म करने की शिक्षा में भगवद्भक्ति का मार्ग सिखाया जाता है। व्याख्यान देना, लेख लिखना, धार्मिक लोकोपकारक भजन और कवितायें तथा गायन सिखाया जाता है। विना पुस्तक देखे मौखिक शिक्षा भी कण्ठस्थ कराई जाती है। इनका भोजन साधारण लघु और सात्विक होता है जिसमें शरीर के निर्वाह की ओर ही लक्ष है स्वाद या रसना की लालसा तृप्ति की ओर नहीं। यह अपना भोजन स्वयं बनाते हैं, कूए से जल लाते हैं। मार्जन, लेपन, पात्र शुद्धि भूमि परिशोधनादि भी स्वयं करते हैं। नित्य प्रति सब के साथ उषः काल में (४ बजे) उठते हैं। शौच स्नानादि से निवृत हो सन्धोपासन के अनन्तर सब के साथ मिल

कर ईश्वर प्रार्थना करते और फिर सब ही के साथ तालाब की मिट्टी खोदते और छांटते हैं। आश्रम के एक भाग में वृक्षों की सभाल उनका काटना छांटना, भूमि की विषमता को सम करना तथा अन्यान्य ऐसे कार्यों का करना। कुश्ती, मल्ल युद्ध करना आदि भी कराये जाते हैं जिससे स्वास्थ, अच्छा है, शरीर हृष्ट पुष्ट है तथा सब परिश्रमी और सहन शील बनते जारहे हैं! सायंकाल की प्रार्थना में भी सब के साथ मिलते हैं। रात्रि के १० दस बजे भूमि या काष्ट के बने तख्तों पर आसन बिछाकर शयन करते हैं। वस्त्र स्वदेशी, सादे, सस्ते और दृढ विहित विधी से पहिनते ओढते हैं।

साधारण पाठशाला:— ग्रामों के साधारण लड़के नित्य अपने घरों से आकर ६ घंटे यहां देवनागरी महाजनी, हिन्दी तथा अंग्रेजी की शिक्षा पाते हैं। यथा समय योग्यता आने पर संस्कृत भी पढाई जायगी। इन्हे व्यवहारोपयोगी शिक्षा के साथ भगवान की भक्ति लोकोपकार और देशोद्धार के धार्मिक भाव

पूर्ण भजन, गीत प्रार्थनायें और स्तुतियें भी सिखाई जाती हैं। तालाब की मिट्टी वह भी बाहर डालते हैं तथा व्यायाम और खेल कूद के स्थान में आश्रम के एक भाग की भूमि वृक्षों और पौधों की देख रेख में शारीरिक परिश्रम भी करते हैं। शिक्षा निःशुल्क दीजाती है। भगवान की भक्ति का भाव सभी कामों के करते हुए इनके हृदय में अंकित कराने को ओर हर समय ध्यान रक्खा जाता है। इनमें असमर्थ गरीब विद्यार्थियों को पुस्तकादि आश्रम से दीजाती हैं।

अछूत पाठशाला:— इसमें अब तक चमारों के लड़के देव नागरी की शिक्षा पाते हैं। आरम्भ में भगवद्भक्ति पूर्ण भजन महात्माओं के शब्द खंजरी और झांझों पर गाते और साथ ही साथ नाचते हैं। अच्छी तन्मयता होजाती है। आसन लगाकर ध्यान भी करते हैं। इन्हें पुस्तक पत्र पट्टी आदि सब सामान आश्रम की ओर से दिया जाता है। भाव उच्च और उदार बनाने का पूरा यत्न किया जाता है। तालाब की मट्टी यह भी खोदते और

बाहर निकालते हैं। आश्रम के जिस भाग में ये रहते हैं उसके वृक्षों की देख देख भूमि को सम और शुद्ध रखने के ब्याज से इन्हें भी कुछ परिश्रम करने के लिये समय और अवसर दिया गया है। ये लोग भी प्रातःकाल स्नान करने लगे हैं। स्वच्छता और स्वास्थ्य रक्षा की बातें इन्हें यथा समय बताई जाती है। शनैः इन्हें और भी जीविका सम्बन्धी बातें ऐसे ढंग से बताई जायगी कि जिन के द्वारा धार्मिकता और लोक हित के साथ इनके हृदय में भगवान की भक्ति अंकित होकर इन्हें ईश्वर और जनता रूपी जनार्दनका सच्चा भक्त और अपना बनजानेका सौभाग्य प्राप्त हो और इनका और देशका कल्याण होगा

स्त्रियों तथा कन्याओं की शिक्षा शाखा।

यह भी बीज रूप से आरम्भ कर दी गई है, तीन चार लड़कियों तथा स्त्रियों को अबतक शिक्षा दी गई है व्याख्यान देनेका भी अभ्यास कराया गया है। उत्तम भक्ति भाव पूर्ण शिक्षा जनक दोहे, चौपाई और श्लोक याद कराये गये है। इनके लिये अध्ययन शाला, निवास स्थान, व्यायाम भूमि, भ्रमण वाटिका 'रामसर बाजार से

अग्निकोण में बहुत सुरक्षित और सुखद तथा एकान्त ब. नाये गये हैं। शारीरिक परिश्रम सहनशीलता व्यायाम और स्वास्थ्य रक्षा के लिए उतनी भूमि के पौधों की देख देख नवीन वृक्षारोपण भूमि शोधन, लेपन नियत समय पर तालाब की मिट्टी खोद बाहर डालने का कार्य इनके लिये भी कर्तव्य है। इनमें से भी जिन लडकियो को प्राथना में सब के साथ सम्मिलित होने का अधिकार प्राप्त है। वे प्रातः सायं नित्य उपस्थित होती है। भाव ऐसे ब. नाये जा रहे हैं जिससे स्त्री जाति में ये भगवद्भक्ति धर्म भाव, सर्व भूत हित से चिन्ता, सहानुभूति, प्रेम, और उच्च उदार भावों को उत्पन्न करा सकें। भोजन बनाना सीना, रोगियों की परिचर्या, मृदु भाषण आदि सद्गुणों की ओर हरएक उपाय से इनको आकृष्ट और लालायित किया जाने की अवस्था की जारही है। इनमें एक लडकी संस्कृत का अभ्यास कर अध्यापिका बनी है। यह आजन्म अविवाहित रहकर स्त्री समाज के हितार्थ अपना जीवन अर्पण कर चुकी है।

अतिथियों और सत्संगियों की व्यवस्था अलग की गइ है। एतर्थ एक स्वतन्त्र स्थान आश्रम में बनाया गया है जिस क पास ही इन सज्जनों के भोजमार्थ भोजनशाला भी बनाइ जा रही है। स्थान एकान्त आश्रम के उत्तर भाग में है। वृक्ष इस के भी चारों ओर लगे हुए हैं और लगाये जा रहे है। तालाब की मिट्टी खोदना छांटना तथा दोनों समय ईश्वर प्रार्थना में सम्मिलित होना आश्रम की परिधी में रहने वाले सभी व्यक्तियों के लिये कर्तव्य है। थोडी देर के लिये आने जाने वाले दर्शकों के लिये भी मिटी छाँटने का नियम है जो प्रेम पूर्वक पालन कराया जाता है। प्रेम और धर्म-भाव आश्रम की सीमा में व्याप्त रहे तदर्थ सब प्रकार से यत्न किया जाता है।

अतिथियों और सत्संगियों की भोजन व्यवस्था आ-श्रम की ओर से कीजाती है। कोइ अपने पास से खाने पीने की इच्छा वा नियम रखते हो तो उसमें बाधा नहीं डाली जाती। स्वयं पाक बनाने वालों के लिये वैसी ही व्यवस्था बन सकती है। आश्रम में सबको ब्रह्मचर्य व्रत

से रहना होता है तथा आश्रम के अन्यान्य नियम भी पालन करने होते हैं। एकान्त भजन ध्यानादि करने के लिये एक गुफा भी बनाई गई है। यह विशेष प्रसन्नता की बात है कि तालाब को मिट्टी हिन्दू, मुसलमान इसाइ तथा अंगरेज सबने ही बड़े प्रेम से खोदी है।

स्थापना—आश्रम का बीज यों तो ६ सात वर्ष से बोया गया है परन्तु इस प्रकार का व्यवस्थित कार्य विगत वैशाख सम्वत् १९७६ से आरम्भ है अब इसके प्रबन्ध और कार्य निर्वाह के लिये एक सभा का भी संगठन होगया है।

इस आश्रम के ऐसे उच्च, सब व्यापी और उदार भावों को देख श्रीमान पूज्यपाद श्रीस्वामीजी महाराज के कृपा प्रसाद से इस विवरण के इस तुच्छ लेखक ने भी अपना जीवन इस पवित्र शान्ति निकेतन भगवद्भक्ति आश्रम के अर्पण करदिया है। अन्त में उस प्रार्थना का उल्लेख कर इस विवरण को समाप्त किया जाता है, जो प्रातः सायं यहां की जातीहै, जिसे पढ़कर उदार और सहृदय जन आश्रम की सब कथा भले प्रकार समझ लेंगे।

॥ ओ३म ॥

प्रार्थना

हे परमेश्वर ! परम पिता परमात्मन् आप हमारे संरक्षक और सहायक तथा प्रेरक हैं। हम सब मिलकर एक तुम्हारी ही भक्ति करें, तुम्हारे चरणों में श्रद्धा भक्ति पूर्वक शिर झुकाते रहें और एक मात्र तुम्हारी ही सहायता चाहें। अय हमारे आत्मा जगदीश्वर आप अनन्त क्षमा स्वरूप और दयालु हो। हे करुणा सागर ! हम तुम्हें छोड़ कर और किसकी शरण लें। केवल एक मात्र तुमही हमारे आधार और अधिष्ठान हो। हे हमारे सर्वस्व ! परमात्मन् हम तुम्हारे पवित्र चरणों को बारंबार प्रणाम करते हैं। आपही हमारी टेक हो और पत रखने वाले हो, प्रतिज्ञा पर आपही दृढ़ता के स्थिति स्थापक हो। हे अनन्त ! अपार प्रकाश स्वरूप, पवित्र ज्योति परमात्मन्, आप हमको श्रेयस्कर श्रेष्ठ मार्ग से अपनी प्राप्ति की ओर लेचलिये, आपही सत् पथ प्रदर्शक नेता तथा संचालक हैं हे अन्तर यामिन् ! हम तेरे हैं, हमको अन्तरयामी रूप से

प्रेरणा करो कि हम तेरे उस मार्ग पर चलें कि जिस पर तेरे पूर्ण भक्त ऋषि महर्षि चले हैं। और जिस मार्ग द्वारा तुमको प्राप्त हो चुके हैं। जिन पर तुम्हारा परम अनुग्रह तथा प्रशाद हुआ हो। और हे सर्व शक्तिमान्! हमारे प्रभु हमें उस मार्ग से कभी मत चलाओ जिस पर तेरे अभक्त चलेहों, और तुम्हारी प्रसन्नता से हम कभी वंचित न रहें हे प्रभु! तुम अन्तरयामी प्रेरक सखा हो, हम तुम्हारी ही शरण हैं। अतएव हमारी रक्षा करो। हे जगदीश्वर जगदाधार! हमको वह पवित्र दृढात्मिका बुद्धि प्रदान करो, कि जिसमें केवल एक मात्र तुमारा ही दृढ विश्वास तथा निश्चय हो। हमको वह अहकार दो जिसमें हम अपना आपा तुमको कह सकें, मनमें तुम्हारा शिव संकल्प उठै, चित्त में तुम्हारा ही चिन्तन रहै, हमारे नेत्र और हृदय खुले हों, और उनपर तुम्हारा पूरा अधिकार हो। हमारे सब के द्वारा केवल आप की जय हो, आप हमारे जीवन के नियन्ता प्राण स्वरूप हो। हे स्वामिन्! हमारी प्रत्येक क्रियायें और चेष्टायें आपके चरणों में समर्पण होवें।

हमारे भाव महान उदार तथा गम्भीर हों। हम सब प्राणी मात्र को अपना ही आत्म स्वरूप देखें। और सबकी भलाई में अपनी भलाई समझें, अहर्निश परोपकार में रत रहें, और तुम्हारी ही भक्ति का सर्वत्र प्रचार करते हुये, अपने जीवन को सफल करते हुये, तुम्हारे पवित्र ज्योतिमय चरणों के समीप बैठने के योग्य बनें। हे पतित पावन! दीनों के उद्धार करने वाले परमात्मन् हमको ऐसी उदार बुद्धि दीजिये कि जिससे हम दीन दुखियों की सहायता सच्चे हार्दिक भाव से करें। हमें तुम्हारे प्रेम में ही जीवन प्रिय हो। हे विश्वात्मा! विश्वस्वरूप!! हम तुम्हारे भक्ति मार्ग पर चलते हुये महान् दुःखों को भी सानन्द सहन कर सकें, तुम्हारे भजन में दृढ़ रहें, सबके साथ पवित्र प्रेम करें। हे परमेश्वर! हम सबको अपना ही आत्मा मानें, हमारा आचरण सबकी भलाई के लिये हो। हे अनन्त शक्ति परमात्मन्! आपकी शक्तियें अपरिमित बे अन्दाज हैं, तुमारी दात से कोई बढ़ नहीं सकता है। तुमारी दक्षिणा ज्योति की तरह सबके ऊपर जगमगा

रही है । तुमारी शक्तियों, और सच्चे उदार वचनों, मेहरबानियों का कोई नियन्ता नहीं है। कोई नहीं कह सकता है कि उसने मुझे नहीं दिया है । तुमारे द्वार से कोई निराश नहीं गया है । सबने अभीष्ट फल प्राप्त कर जीवन का फल पाया है। हे ! राम कृष्ण आदि अनन्त नामो और रूपों के धारण करने वाले, हमारे सच्चे प्रभु, अन्त में हमारी यही प्रार्थना है, कि हम तेरे सच्चे भक्त बनें, तेरी ही भक्ति का प्रचार करें, हम सब के द्वारा तुमारी ही इच्छा पूर्ण हो, सर्वत्र तुमारा ही राज हो। हे अनन्त अपार ज्ञानानन्द स्वरूप । आपको हमारा अनंत धन्यवाद हो, और आपका हमको आशीर्वाद हो। अतएव साञ्जली बद्ध आपको भूयापि नमस्कारों पर नमस्कार है ।

॥ ओ३म् शंकरोतु शंकरः ॥

दुर्गाष्टमी आश्विन	सारे जगत का कृपा पात्र
सं० १९७७.	भगवद्भक्तों का लघु सेवक
ता० २०-१०-१९२०.	मंगलराम शर्मा.

नोट— आश्रम का पता- रामपुरा पो० रेवाड़ी
जि० गुड़गावां (पंजाब)